

सम्पादकीय

चार ट्रिलियन डॉलर की आर्थिकी

भारत जापान को पीछे कर दुनिया की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया है। यकीनन ऐतिहासिक उपलब्धि और सुखद खबर है। नीति आयोग के सीईओ वीआर सुब्रह्मण्यम ने परिषद की बैठक में यह घोषणा की। अब भारत की अर्थव्यवस्था 4.187 ट्रिलियन, अर्थात् 4000 अरब डॉलर की है। 2028 में भारत की अर्थव्यवस्था 5.58 ट्रिलियन डॉलर की हो सकती है और भारत जर्मनी 5.25 ट्रिलियन डॉलर) को पछाड़ कर तीसरे स्थान पर पहुंच सकता है। फिलहाल अमेरिका (30 ट्रिलियन से अधिक), चीन (19 ट्रिलियन से ज्यादा) और जर्मनी 4.75 ट्रिलियन डॉलर) ही भारत से बड़ी अर्थव्यवस्थाएं हैं। बीते 10 सालों के दौरान भारत की अर्थव्यवस्था दोगुनी हुई है। 2032 में भारत 10 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बाला देश होगा। भारत की इतनी अर्थव्यवस्था स्वाभाविक भी नहीं, क्योंकि यह 16 करोड़ से अधिक की आबादी बाला देश है। देश की सकल जनता और राजस्थान सरकार को फटकार लागई, जबकि अकेले कोटा ही नहीं देशभर के छात्रों की मौत पर सुप्रीम कोर्ट ने छह मई को स्वतः संज्ञान दिया था।

आत्महत्या करने वाले सभी छात्रों की सूचि

हाल ही में सर्वोच्च न्यायालय ने कोटा में हुई छात्रों की मौत पर सुनवाई की। इन पर चिंता जाहिर हो गई। स्टूडेंट्स सुसाइड के मामलों को भी गंभीर बताया और राजस्थान सरकार को फटकार लागई, जबकि अकेले कोटा ही नहीं देशभर के छात्रों की मौत पर कार्रवाई होनी चाहिए। इन मौत की जांच होनी चाहिए। देशभर के छात्रों की आत्महत्या और इनको रोकने पर विचार होना चाहिए।

आईआईटी खड़गपुर सुसाइड को लेकर कोर्ट ने 14 मई को कहा था वो सिर्फ यह पता लगाने के लिए संज्ञान ले रहे हैं कि प्रशासन ने अमित कुमार एवं अन्य बनाम भारत संघ एवं अन्य मामले में शुक्रवार को सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई सुप्रीम कोर्ट ने इस दौरान कोटा में हो रहे स्टूडेंट्स सुसाइड के मामलों को भी गंभीर बताया और राजस्थान सरकार को साझा कराया।

अशोक मधुप

सुसाइड को लेकर कहा, 'किसी भी आत्महत्या का काई एक कारण नहीं होता। वही एजाम सभी बच्चे दे रहे होते हैं। ऐसे में सुसाइड के लिए मिले-जुले फैक्टर्स जिम्मेदार होते हैं। इसमें जेनेटिक्स कारण, सामाजिक कारण, पियर प्रेशर, माता-पिता के एक्सप्रेक्टेशन्स, शिक्षा तंत्र सब शामिल हैं।

दृंग त्रिवेदी कहते हैं कि कहीं न कहीं हम बच्चों से ऐसा भी नहीं होता कि वे स्टूडेंट्स सुसाइड के लिए जाते हैं। इस रिपोर्ट को तैयार करने के लिए नेशनल क्राइम रिकॉर्ड ब्यूरो के आंकड़ों का इस्तेमाल किया गया है। आईएसी-3 एक नॉन-पर्सनल अर्थी-प्रोफेशनल है जो सभी उत्तम शिक्षा संस्कृते वाले लोग जाते हैं। इसमें शामिल होने वाले लोग जाते हैं कि वे अपनी



रामचरितमानस में प्रकृति चित्रण

ओमप्रकाश 'सुमन'

ललित गर्ग

प्रकृति मानव जीवन से अभिन्न रूप जुड़ी है हम वैदिक काल से ही देखते ही त्रियों ने ऊंचा, इंद्र, वरुण, सूर्य, ब्रह्म, मिरि, सरिता, वन, उपवन आदि नेकर करके रूपों में प्रकृति को स्वीकार करका है। वैदिक साहित्य का निर्माण भी प्रकृति के आंगन में हुआ था मानव ने कृति की वंदना भी की। प्राचीन काल से ही प्रकृति मानव की सहचरी रही है। अमरचरितमानस में तुलसी ने प्रकृति का यापक चित्रण तो नहीं किया है पर वन नदी ताल छवि थी, दिन दिन प्रति अति होंगी सुहोये। खग मृग बृद्ध आनन्दित रह्हीं, मधुप मधुर गुंजत छबि लह्हीं। राम के निवास से (पर्वत वन नदी और तालाब शोभा से छा गए वे दिनोंदिन अधिक सुहावने मालूम होने लगे पश्चि और पशुओं के समूह आनन्दित रहते हैं और भौंप मधुर गुंजार करते हाए शोभा पा रहे हैं। मानस में तो प्रकृति के अनेक रूप मिलते हैं ललित बहु जाति सुहाई, फूलहि सदा बसंत की नाईं। (सभी लोगों ने भिन्न भिन्न प्रकार की पुष्प वाटिकाएं प्रयत्न करके लगा रखी हैं जिनमें बहुत जातियों की सुंदर और ललित लताएं सदा बसंत की तरह फूलती रहती हैं)

श्रीराम अगस्त्य मुनि से भेटकर गोदावरी के समीप पर्ण कुटीर बनाकर उस स्थान पर निवास करने लगे। मानस में तुलसी ने वर्णन करते लिखा है मिरि वन नदी ताल छवि थी, दिन दिन प्रति अति होंगी सुहोये। खग मृग बृद्ध आनन्दित रह्हीं, मधुप मधुर गुंजत छबि लह्हीं। राम के निवास से (पर्वत वन नदी और तालाब शोभा से छा गए वे दिनोंदिन अधिक सुहावने मालूम होने लगे पश्चि और पशुओं के समूह आनन्दित रहते हैं और भौंप मधुर गुंजार करते हाए शोभा पा रहे हैं। मानस में तो प्रकृति के अनेक रूप मिलते हैं ललित बहु जाति सुहाई, फूलहि सदा बसंत की नाईं। (सभी लोगों ने भिन्न भिन्न प्रकार की पुष्प वाटिकाएं प्रयत्न करके लगा रखी हैं जिनमें बहुत जातियों की सुंदर और ललित लताएं सदा बसंत की तरह फूलती रहती हैं)

ललित गर्ग

है, क्योंकि उन्होंने कभी अकबर के सामने समर्पण नहीं किया। मुगल सम्प्राप्त के सामने समर्पण का युद्ध हुआ था। महाराणा प्रताप ने लगभग 20 हजार सैनिकों के साथ 85 हजार की मुगल सेना से बहुत ही साहस, शौर्य, पराक्रम एवं बहादुरी के साथ सामना किया। दोनों सेनाओं के बीच गोगुडा के नजदीक अरावली पहाड़ी की हल्दीघाटी शाखा के बीच यह युद्ध हुआ। इस लड़ाई को हल्दीघाटी के युद्ध के नाम से जाना जाता है। ऐसा माना जाता है कि इस युद्ध में न तो अकबर जीत सका और न ही राणा हारे। मुगलों के पास सैन्य शक्ति अधिक थी तो राणा प्रताप के पास जुझाझ शक्ति की कोई कमी नहीं थी। उन्होंने अखिरी समय तक अकबर से संधि की बात स्वीकार नहीं की और मानसमान के साथ जीवन व्यतीत करते हुए लड़ाइयां लड़ते रहे।

इस युद्ध में उनका प्रिय घोड़ा चेतक भी वीरगति के अनसार ज्योष्ठ माह के शुक्ल पक्ष की तृतीया

अमूल्य योगदान का सम्मान भी है। महाराणा प्रताप और मुगल सम्प्राप्त अकबर के सेनापति राजा मानसिंह के बीच 8 जून 1576 में हल्दीघाटी का युद्ध हुआ था। महाराणा प्रताप ने लगभग 20 हजार सैनिकों के साथ 85 हजार की मुगल सेना से बहुत ही साहस, शौर्य, पराक्रम एवं बहादुरी के साथ सामना किया। दोनों सेनाओं के बीच गोगुडा के नजदीक अरावली पहाड़ी की हल्दीघाटी शाखा के बीच यह युद्ध हुआ। इस लड़ाई को हल्दीघाटी के युद्ध के नाम से जाना जाता है। ऐसा माना जाता है कि इस युद्ध में न तो अकबर जीत सका और न ही राणा हारे। मुगलों के पास सैन्य शक्ति अधिक थी तो राणा प्रताप के पास जुझाझ शक्ति की कोई कमी नहीं थी। उन्होंने अखिरी समय तक अकबर से संधि की बात स्वीकार नहीं की और मानसमान के साथ जीवन व्यतीत करते हुए लड़ाइयां लड़ते रहे।

इस युद्ध में उनका प्रिय घोड़ा चेतक भी वीरगति के अनसार ज्योष्ठ माह के शुक्ल पक्ष की तृतीया

स्थापित करने की भरपूर कोशिश की। लेकिन महाराणा प्रताप ने कभी भी अकबर की अधीनता को स्वीकार नहीं किया और जीवन भर मुगलों के खिलाफ स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए संघर्ष करते रहे। उनका परिवार बहुत ही कठिन परिस्थितियों में रहा। वे कई सालों तक जंगलों, गुफाओं और पहाड़ियों में रहे। उन्होंने पेंडों की छाल से बने साधारण काढे पहने और जंगली फल और जड़ें खाई। उनकी पत्नी और बच्चे कभी-कभी घास की रोटी खाते थे। फिर भी, उन्होंने कभी आत्मसमर्पण नहीं किया या मुगलों के साथ समझौता नहीं किया। उनके शौर्य और वीरता की कहानी को आज भी बहुत ही गर्व के साथ याद किया जाता है। राजस्थानी भाषा के ख्यात कहन्यालाल सेठिया की प्रसिद्ध

पर हुई है। हमने इन असली महानायकों को भूलाकर अकबर एवं औरंगजेब जैसे आकांक्षाओं को नायक बनाने की भारी भूल की है, नायक अकबर नहीं महाराणा प्रताप है, उन्होंने औरंगजेब को भुट्टें टेकने पर मजबूर किया और घुट-घुट कर मरने पर मजबूर किया। सनातन धर्म को नष्ट करने की साजिश करने वाले भारत के नायक कैसे हो सकते? अकबर हो या औरंगजेब, हिन्दुओं एवं हिन्दू राष्ट्र के प्रति सबकी मानसिकता एक ही थी- भारत की सनातन परंपरा को रौद्रने के लिए तमाम घड़यत्र रचना एवं भारत की समृद्ध विरासत को लूटना। इसके विपरीत, महाराणा प्रताप ने अपने बलिदान से सनातन संस्कृति की रक्षा की। ये राष्ट्रायक हमारी असली प्रेरणा हैं।

भारतीय इतिहास में जितनी महाराणा प्रताप की बहादुरी की चर्चा हुई है, उन्हींनी ही प्रशंसा उनके घोड़े चेतक को भी मिली। कहा जाता है कि चेतक की फैट 110 किलोग्राम का कवच पहनते थे, वह 25-25 किलों की 21 तलवारों के दम पर किसी भी दुश्मन से लड़ जाते थे। महाराणा प्रताप एक महान पराक्रमी और युद्ध फैट 5 इंच लंबे थे। वह 110 किलोग्राम का कवच पहनते थे, वह 25-25 किलों की 21 तलवारों के दम पर किसी भी दुश्मन से लड़ जाते थे। महाराणा प्रताप की बहादुरी की चर्चा हुई है, उन्हींनी ही प्रशंसा उनके घोड़े चेतक को भी मिली। कहा जाता है कि चेतक की फैट ऊंचे हाथी के मस्तक तक उछल सकता था। कछु लोकीतों के अलावा हन्दी कवि धन-दौलत की नहीं बल्कि मान-सम्पादन की ज्यादा

मानस में तुलसीदास ने अनेक थलों पर उपवनों का वर्णन किया है जिनके बारे में लोकों का विवरण दिया गया है। इन उपवनों का मानस भवति कृष्ण रामना ना रह है जो सारों ने चित्रकूट का अत्यंत सजीव वर्णन मिलता है बाल्मीकि ने अपनी रामायण में चित्रकूट की महिमा का पहले ही वर्णन किया है। तुलसीदास लिखते हैं नदी पनच सर सम दम दाना, सकल कलुष कलि साउन नाना। चित्रकूट

का जनुसर उठ नाह के सुराना नदा का धूताना तिथि थी। जो इस वर्ष 29 मई को मनाई जाएगी। यहां प्रताप ने हार नहीं मानी और युद्ध जारी रखा। मुगल शासक अकबर ने मेवाड़ पर अपना अधिकार

जो प्राता हो नदा, लानगा इसका जाद ना नहराना नहा के उत्तरा यहै नाराता साउना का प्राप्ताद्ध राजस्थानी कविता 'पातल और पीथल' हल्दीघाटी युद्ध के बाद की घटनाओं पर आधारित राणा प्रताप

या नुच्छ लाकाता के उत्तरा है पा जाय श्यामनारायण पांडेय की वीर रस कविता 'चेतक की वीरता' में उसकी बहादुरी की खूब तारीफ की जाती है। अकबर के सामने महाराणा पूरे आत्मविश्वास से टिके रहे।

मारत की फूटनातक ट्रेइंग से बायलाया पाकिस्तान

। मानस के कथानक का अधिकांश गांग अरण्य (बन) से ही संबंधित है और वनों का चित्रात्मक वर्णन नहीं किया जाया है। जनकपुर की पुष्प वाटिका के वर्णन में तुलसी ने लिखा है :- नव पल्लव बाण है कलयुग के समस्त पाप उसके अनेकों हिंसक पशु (रूप निशाने) हैं। चिक्रूट ही मानो अचल शिकारी है, जिसका निशाना कभी चूकता नहीं और जो सामने से मारता है। सँग रूपक अलंकार सहित प्रकृति चित्रण में चिक्रूट की माहिमा का गान किया गया है। पांपा सरोवर के वर्णन में भी तुलसीदास ने लिखा है बिकसे सरसिज नाना रंग मधुर मुखर गुंजत बहु भूंग। अपनी संपत्ति से कल्पवृक्ष को भी लजा देते हैं हैं। परीहा, तोते, चक्रोंका आदि मीठी गोली बोल रहे हैं और मोर सुंदर नृत्य नर रर रहे हैं। सरोवर का जल निर्मल है जैसमें अनेक रंगों के कमल खिले हैं तल के पक्षी कलरव कर रहे हैं, भ्रमर बहइ मनोहर बाऊ। (पांपा सरोवर में रंग-बिरंगा कमल खिले हुए हैं। बहुत से भौंर मधुर स्वर से गुंजार कर रहे हैं।

जनु अचल अहेरी, चुकइ न घात मार मुझभेरी।

(नदी मंदकिनी) उस धनुष की

प्रत्यंगा (डेरी) है और शम, दम, दान बाण हैं कलयुग के समस्त पाप उसके

अनेकों हिंसक पशु (रूप निशाने) हैं।

ऑपरेशन सिंदूर का मकसद और पाकिस्तान का असल चेहरा दुनिया को बताने के लिए देश के 59 सांसदों को 33 देश भेजा जा रहा है। 59 सांसद 7 सर्वदलीय टीमों में बटे हैं। इसमें ऑपरेशन सिंदूर का बैकग्राउंड और डिलोमैटिक एवं सैन्य कार्रवाई के पांच बड़े संदेश इन 33 देशों तक पहुंचाने पर जोर दिया जाएगा। असल में, पहलगाम आतंकवादी हमले और ऑपरेशन सिंदूर में पाकिस्तान की पोल खुलने के बाद भारत ने उसके खिलाफ चौतरफा मोर्चा खोल दिया है। पाक की 'आतंकिस्तान' की इमेज को बेनकाब करने के लिए एक और मोदी सरकार ने आतंकी गुटों और उनके ढांचों के खिलाफ था। आतंकी अड्डों को नपी-तुली कार्रवाई में निशाना बनाया गया। पाक सेना ने इसे खुद के खिलाफ हमला माना और पलटवार किया। दूसरा संदेश है, पाक आतंक का समर्थक। सांसद कुछ सबूत लेकर जा रहे हैं, जिनमें वो बताएंगे कि पहलगाम हमले में पाक समर्थित आतंकी संगठन देरिन्द्रेम पांप की शिकारी थी। दूसरे पाठ्ये द्वारा

एफएटीएफ एक अंतरराष्ट्रीय संस्था है जो मनी लॉन्जिङ, टेरर फाइनेंसिंग और हथियारों के प्रसार से जुड़ी फाइंडिंग पर निगरानी रखती है। जो देश इन गतिविधियों के खिलाफ जरूरी कदम उठाने में नाकाम रहते हैं, उन्हें एफएटीएफ की ग्रे लिस्ट में डाल दिया जाता है। इसका सीधा असर देश की अर्थव्यवस्था, विदेशी निवेश और अंतरराष्ट्रीय कर्ज लेने की क्षमता पर पड़ता है।

बैजयंत पांडा के नेतृत्व में दूसरा दल बहरीन गया है। सांसदों का दौरा 22 मई से 5 जून तक चलेगा।

59 सांसद दुनिया को ये 5 बड़े संदेश दें। जिनमें पहला संदेश है आतंकवाद पर जीरो टॉलरेंस। इसमें बताएंगे कि ऑपरेशन सिंदूर आतंकी गुटों और उनके ढांचों के खिलाफ था। आतंकी अड्डों को नपी-तुली कार्रवाई में निशाना बनाया गया। पाक सेना ने इसे खुद के खिलाफ हमला माना और पलटवार किया। दूसरा संदेश है, पाक आतंक का समर्थक। सांसद कुछ सबूत लेकर जा रहे हैं, जिनमें वो बताएंगे कि पहलगाम हमले में पाक समर्थित आतंकी संगठन देरिन्द्रेम पांप की शिकारी थी। दूसरे पाठ्ये द्वारा

बनाई जा रही हैं। संभवतः अगले महीने एफएटीएफ की समीक्षा बैठक होने वाली है और भारत ने पुरजोर सबूतों के साथ पाकिस्तान की तरफ से फैलाए जा रहे आतंकवाद के मुद्दे को उठाने का फैसला किया है। इसमें भारत की कोशिश पाकिस्तान को एक बार फिर से ग्रे लिस्ट में डलवाने की होगी। भारत का मानना है कि पाकिस्तान आतंकवाद को रोकने में नाकाम रहा है और वैश्विक संस्थाओं से उसे जो धन मिलता है, उसका इस्तेमाल वो आतंकवादियों को हथियार और धन मुहूर्या करवाने में करता है। आईएमएफ से हाल ही में मिले तोन में से उसने 14 करोड़ मारा 200-प्रैमियम स्ट्रिंग में तवार तांा आतंकियों को

में जो देश नाकाम रहता है, तो फिर उसके बैकें लिस्ट होने का भी खतरा रहता है। भारत की कोशिश ग्रे के बाद पाकिस्तान की काली करतूतों को उजागर करते हुए उसे काली सूची में ही डलवाने की है। भारत का साफ और स्पष्ट शब्दों में आरोप है कि पाकिस्तान ने अपने क्षेत्र से चलने वाले आतंकी संगठनों पर कोई ठोस कार्रवाई नहीं की है। इधर उलट उसने अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं और खासकर आईएमएफ और विश्व बैंक से मिले फंड का इस्तेमाल हथियार और गोला-बारूद खरीदने में कर रहा है।

यह उल्लेखनीय है कि पाकिस्तान आतंकवाद का अड्डा रहा है, यह कोई नया तथ्य नहीं है। यह बात तो हाल में खुद वहीं के रक्षा मंत्री ने एक ब्रिटिश टीमी को दिए इंटरव्यू में मानी, हालांकि उन्होंने कहा कि पाकिस्तान यह गंदा काम अमेरिका, ब्रिटेन और अन्य पश्चिमी देशों के लिए कर रहा था। 2008 के मुंबई हमलों के बाद खुद शपांग द्वारा प्राक्तिकरण के बायलाया पाकिस्तानी दृष्टि के तेज प्रबल नियमित

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक व सम्पादक तकदीस फ़ाटिमा रिज़वी ने गुप-५ काकशन, ५५-बी, बज़ीर हसन रोड, लखनऊ से मुद्रित कराकर प्रथम तल, एस्जिद नूर महल, साकेत पल्ली, नरही, लखनऊ से प्रकाशित किया। किसी भी लेख में कोई विवाद के लिए 'अवधानाम' जिम्मेदार नहीं रिश्तों को वैधिक मंच पर उत्तराग करेंगे। ये कई देशों में बताएंगे कि कैसे पाकिस्तान आतंकवादियों की पौध को आने, आतंक के अड़े में प्रशिक्षण देने, फ़ड़िग करने से लेकर हमले करने तक के रजिस्टरेट का नूतनगा था। इनसे नहान हुए हमलों का भी पूरा चिठ्ठा सांसद ले जा रहे हैं। तीसरा सदेश है भारत जिम्मेदार और संयुक्त भारत ने सैन्य कार्रवाई में भी जिम्मेदारी और संयम देने, फ़ड़िंग करने से लेकर हमले करने तक के रखें। जानकारी न लेना हुए जाताकाना का देना तय किया है। दरअसल, एफ़एटीएफ़ एक अंतरराष्ट्रीय संस्था है जो मनी लॉन्डिंग, टेरर फ़ाइंडरेसिंग और हथियारों के प्रसार से जुड़ी फ़ड़िंग पर निगरानी रखती है। भारत

गोगा, इसकी जिम्मेदारी लेखक की है। किसी भी समाचार के विवाद के लिए न्याय क्षेत्र लखनऊ ही होगा।

पोलिटिकल एडीटर : एम.एम. मोहसिन

स्थानीय संपादक
मोहम्मद आलम रिज्जवी

RNI No UPHIN/2010/31173
टेली फैक्स नं. : 2288091, 4065716
avadhnamahindi@gmail.com,

दोस्री पारा राजनीति राजनीति बनाने के लिए ड्रेड करता है। दूसरी ओर भारत ने पाकिस्तान के खिलाफ कूटनीतिक स्ट्राइक भी कर दी है। पाक ने कारबाई रोकने का जब आग्रह किया तो भारत ने उसे तत्परता से स्वीकारा।

चौथी सन्देश है, आतंक के खिलाफ विश्व एकजुट हो। सांसद इन देशों से आतंकवाद के खिलाफ खुलकर आवाज उठाने और इससे निपटने के लिए सहयोग व समर्थन भी मार्गों। अपील करेंगे कि भारत-पाक के विवाद को उठाने वाली है और इसके लिए मजबूत रणनीति बनाना चाहता है कि सभी देश मिलकर आतंकवाद के खिलाफ लड़ें। सरकार का यह भी कहना है कि यह एक महत्वपूर्ण राजनीय प्रयास है। इससे भारत और दूसरे देशों के बीच रिश्ते और मजबूत होंगे।

भारत सरकार काफी मजबूती से एफएटीएफ की बैठक में पाकिस्तान के खिलाफ मामले को उठाने वाली है और इसके लिए मजबूत रणनीति बनाना चाहता है। भारत सरकार ने पहलगाम उठाने में नाकाम रहते हैं, उन्हें एफएटीएफ की ग्रेलिस्ट में डाल दिया जाता है। इसका सीधा असर देश की अर्थव्यवस्था, विदेशी निवेश और अंतर्राष्ट्रीय कर्ज लेने की क्षमता पर पड़ता है। ग्रेलिस्ट में शामिल देश के सामने आतंकवाद के खिलाफ कारबाई करने के लिए कई सख्त शर्तें रखी जाती हैं और अगर उन शर्तों को पूरा करने सबूत पेश करने वाला है।

आत्महत्या करने वाले सभी छात्रों की सोचें



सुप्रीम कोर्ट म जास्टिस जया पांडिवाला आर जिस्टिस आर महादेवन की बेंच ने कहा, कोटा में इस साल अब तक 14 स्टूडेंट्स सुसाइड कर चुके हैं। आप एक राज्य के तौर पर इसे लेकर क्या कर रहे हैं? स्टूडेंट्स कोटा में ही क्यों आत्महत्या कर रहे हैं? एक राज्य के तौर पर क्या आपने इस पर कोई विचार नहीं किया? सुप्रीम कोर्ट ने यह टिप्पणी कोटा में छात्रों का शव पिलने और फरवरी के महीने में 3 सुसाइड हुए थे। वहीं साल 2023 में कोटा में स्टूडेंट सुसाइड के कुल 26 मामले की सुनवाई के दौरान की। सुप्रीम कोर्ट ने राजस्थान टास्क फोर्स के मेंबर और साइकेट्रिस डॉ सत्यकांत त्रिवेदी ने कोटा में हो रहे स्टूडेंट रजिस्ट्रेशन या फालियर स के कास डाल करना हा आज बच्चा ये मानने लगा है कि उसका एकेडमिक अचीवमेंट उसके एपिजस्टेंस से भी बड़ा है। बच्चा तैयारी छोड़ने के लिए तैयार नहीं है, जीवन छोड़ने के लिए बढ़ रही है। यानी देश में आत्महत्या के जितने मामले हर साल आते हैं, उनमें छात्रों की वजह से बच्चा ये महसूस करता है कि मैं पूर्ण संख्या सबसे ज्यादा होती है। आंकड़ों की बात करें तो साल 2021 में 13,089 छात्रों ने आत्महत्या कर ली थी। जबकि, साल 2022 में 13,044 छात्रों ने आत्महत्या की। वहीं 2018 से 2020 के दौरान कुल 33,020 छात्रों ने आत्महत्या की। छात्रों की आत्महत्या के अलग-सर का समय सबम पर जाच करा उनका कोंसलिंग करे। उनकी समस्याओं पर विचार करा छात्र- छात्राओं का सही मार्ग दर्शन करे, ताकि वह आत्महत्या न कर, विपरीत परिस्थिति से संघर्ष करना सीखें। उन्हें जीवन जीने की कला सिखाई जाए। अगर विशेषज्ञ समझें तो कोंचिंग करने वाले और तकनीक शिक्षा प्राप्त करने वाले युवाओं को मैटिशेशन या ध्यान से भी जोड़ा जा सकता है। इससे युवाओं में विषय के प्रति एकाग्रता बढ़ायी चिंतन शक्ति का विकास होगा। ऐनिगेटिव विचार कम होंगे। ये मैटिशेशन या ध्यान उन्हें पूरे जीवन के लिए नई ऊर्जा प्रदान करेगा।

महाराणा प्रतापः शौर्य, बलिदान एवं साहस का अमिट आलेख

महाराणा प्रतापः शौर्य, बलिदान एवं साहस का अमिट आलेख

महाराणा प्रताप जाट युद्ध संघट अकबर के सामने दाणा जानासह के बाप ८ जून १७८८ ने हल्दीघाट का युद्ध हुआ था। महाराणा प्रताप ने लगभग 20 हजार सैनिकों के साथ 85 हजार की मुगल सेना से बहुत ही साहस, शौर्य, पराक्रम एवं बहादुरी के साथ सामना किया। दोनों सेनाओं के बीच गोगुडा के नजदीक अरावली पहाड़ी की हल्दीघाटी शाखा के बीच यह युद्ध हुआ। इस लड़ाई को हल्दीघाटी के युद्ध वेनाम से जाना जाता है। ऐसा माना जाता है कि इस युद्ध में न तो अकबर जीत सका और न ही राणा हासे

भारत की कृत्तिविक अद्धक ये हौसलाया प्रक्रियात्म

गार्ड का फूटनातिक द्राइव से बाहिनी पाकिस्तान
गारंटी जा रही है। मंशबदः अपने गोरे
में वो देश नाकाम रहता है, तो फिर उसके ब्लैक
लिस्ट होने का भी खतरा रहता है। भारत की
कोशिश ग्रे के बाद पाकिस्तान की काली करतूतों
को उजागर करते हुए उसे काली सूची में ही
डलवाने की है। भारत का साफ और स्थायी
में आरोप है कि पाकिस्तान ने अपने क्षेत्र से चलने
वाले अपनी पांच सूची पर कर्तव्यरूप नहीं

गोगा, इसकी जिम्मेदारी लेखक की है। किसी भी समाचार के विवाद के लिए न्याय क्षेत्र लखनऊ ही होगा।

पोलिटिकल एडीटर : एम.एम. मोहसिन

स्थानीय संपादक
मोहम्मद आलम रिज्जवी

RNI No UPHIN/2010/31173
टेली फैक्स नं. : 2288091, 4065716
avadhnamahindi@gmail.com,

दोस्री पारा राजनीति राजनीति बनाने के लिए ड्रेड करता है। दूसरी ओर भारत ने पाकिस्तान के किसी निर्दोष नागरिक की जान न जाए। पाक ने खिलाफ कूटनीतिक स्ट्राइक भी कर दी है। पाक ने कारबाई रोकने का जब आग्रह किया तो भारत ने उसे तत्परता से स्वीकारा।

चौथी सन्देश है, आतंक के खिलाफ विश्व एकजुट हो। सांसद इन देशों से आतंकवाद के खिलाफ खुलकर आवाज उठाने और इससे निपटने के लिए सहयोग व समर्थन भी मार्गी। अपील करेंगे कि भारत-पाक के विवाद को उठाने का राजनीति नहीं है उनका नाम नहीं है। जो देश इन गतिविधियों के खिलाफ जरूरी कदम उठाने में नाकाम रहते हैं, उन्हें एफएसीएफ की ग्रेलिस्ट में डाल दिया जाता है। इसका सीधा असर भारत और दूसरे देशों के बीच रिश्ते और मजबूत होंगे।

भारत सरकार काफी मजबूती से एफएसीएफ की बैठक में पाकिस्तान के खिलाफ मामले को उठाने वाली है और इसके लिए कई सख्त शर्तें रखी जाती हैं और अगर उन शर्तों को पूरा करने सबूत पेश करने वाला है।

उनका नाम राजनीति राजनीति बनाने का चाहता है कि सभी देश मिलकर आतंकवाद के खिलाफ लड़ें। सरकार का यह भी कहना है कि यह एक महत्वपूर्ण राजनीय प्रयास है। इससे भारत और दूसरे देशों के बीच रिश्ते और मजबूत होंगे।

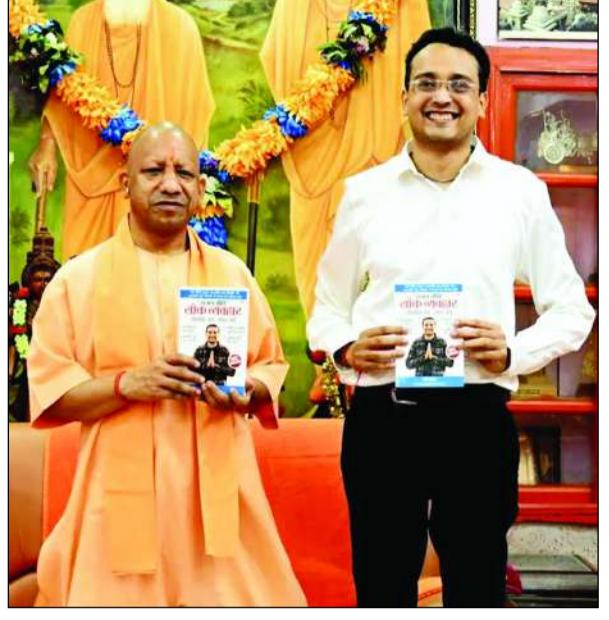
मुख्यमंत्री ने किया राजल नीति का विमोचन

अवधनामा ब्लूरो

गोरखपुर/लखनऊ। शहर के युवा लेखक राजल की नई पुस्तक राजल नीति लोकव्यवहार का विमोचन मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने किया साथ ही साथ पुस्तक की सफलता के लिए आशीर्वाद स्वरूप शुभकामनायें भी दीं।

यह पुस्तक मुख्यतः बातचीत की कला, आर्थिकव्यापास बढ़ावने, सहयोग पाने औं लोगों से बेहतर तालमेल विकसित करने के विषयों पर केंद्रित है। राजल नीति लोकव्यवहार का बांगा और पजाबी संस्करण भी जल्द प्रकाशित होगा। इससे पूर्व भी मुख्यमंत्री द्वारा राजल नीति टाइम मैनेजरें पुस्तक का विमोचन हुआ था जिसका अनुवाद हिन्दी, अंग्रेजी, बांगा, मराठी, गुजराती, ओडिशा, पंजाबी इत्यादि भाषाओं में हुआ था।

राजल ने विमोचन के लिए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के प्रति आभार व्यक्त किया। राजल अब तक 6 पुस्तकें लिख कर चुके हैं जिनमें राजल नीति टाइम मैनेजरें, राजल नीति लोकव्यवहार प्रमुख है। राजल नीति पुस्तकों का विमोचन मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, उत्तर प्रदेश के तत्कालीन राज्यपाल राम नाईक और हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल शिव प्रताप शुक्ल पर चुके हैं और उत्तर प्रदेश के राज्यपाल आनंदीबेन पटेल, गुजरात के मुख्यमंत्री भूपेन्द्र पटेल, उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्री उमेश धामी, केंद्रीय वित्त राज्य मंत्री पंकज चौधरी और भारत के तत्कालीन उपराषाधित वेंकेया नायडू भी शुभकामनाएं दे चुके हैं।



अपने स्वर्गीय दादाजी राधेश्याम गुप्त को समर्पित किया, और बताया की वो जो कुछ भी हैं अपने स्वर्गीय दादाजी राधेश्याम गुप्त जी की वजह पाए जिसमें एल. एल. बी, जननालिज्म, पी. जी. बी. ए और

ही समर्पित हैं उनकी वजह से ही वो कक्षा 6 फैल और पढ़ाई छोड़ने से 9 डिग्री /सर्टिफिकेट की यात्रा तय कर पाए जिसमें एल. एल. एल. बी, जननालिज्म, पी. जी. बी. ए और

बी लेलव जैसी 4 प्रोफेशनल डिग्रियां भी शामिल हैं। इसके साथ ही दो दो विमोचनी देवी युगा के प्रति भी आभार व्यक्त किया। राजल ने यह भी कहा पुस्तक पाठकों के यात्र के बिना अधूरी है इसलिए पाठकों के स्नेह के बिना यहाँ तक पहुंचना संभव नहीं था साथ ही साथ डायमंड बुक्स के निदेशक नरेन्द्र बुक्स के प्रति भी आभार व्यक्त किया। राजल अब तक 6 पुस्तकें लिख कर चुके हैं जिनमें राजल नीति टाइम मैनेजरें और राजल नीति लोकव्यवहार प्रमुख है। राजल नीति पुस्तकों का विमोचन मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, उत्तर प्रदेश के तत्कालीन राज्यपाल राम नाईक और हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल शिव प्रताप शुक्ल पर चुके हैं और उत्तर प्रदेश के राज्यपाल आनंदीबेन पटेल, गुजरात के मुख्यमंत्री भूपेन्द्र पटेल, उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्री उमेश धामी, केंद्रीय वित्त राज्य मंत्री पंकज चौधरी और भारत के तत्कालीन उपराषाधित वेंकेया नायडू भी शुभकामनाएं दे चुके हैं।

विभिन्न जनपदों हेतु 01 अख 69 करोड़ 32 लाख अवधुक्त

लखनऊ। 130 प्र० सरकार द्वारा राज्य /प्रमुख/अन्य जल मार्गों के चौड़ीकरण एवं सुधूर्करण योजनानंतर स्वीकृत विभिन्न जनपदों के 35 चालू कारों हेतु 00 01 अख 69 करोड़ 32 लाख 49 हजार की धनराशि का आवंटन किया गया है। इन 35 कारों में मथुरा के 03, गोमुखदुनगर, गोरखपुर व बलिया के 02-02, देवरिया, जालौन, कानपुर नगर, सीतापुर, मरावारांज, प्रयागराज, महाराष्णरु, जांसी, बस्ती, रामपुर, चन्दौपी, फतेहपुर, प्रतापगढ़, बारांकी, अमरी, अमरोहा, रायबरेली, बहराइच, गोपालगंगा, जैनपुर, लखनऊ का मुफज्जलकारी विभाग, लखनऊ का विभाग विशेषज्ञ एवं विभिन्न जनपदों के लिए अव्याप्ति और समर्पण से अपने माता-पिता और समाज का नाम रोशन किया। विद्यार्थियों को उक्त अधिभावकों की गारंसमयी उपस्थिति में प्रशस्ति पत्र व मोंटेडो भेंट कर समर्पित किया गया। इस विशेष

परिवर्तन चौक पर आयोजित भण्डारे का आयुष मंत्री ने किया थारम्

अवधनामा ब्लूरो

लखनऊ। तालीम, तहजीबी और अद्वा की राजधानी लखनऊ आज एक नए गवर्नर का गवाह बनी, जब Amber Foundation ने "Excellence Recognition Ceremony" के जयिन के बताया की विमोचन किया, बल्कि समाज में शिक्षा की असरी अहमियत को बखूबी रेखांकित किया। इस समारोह में UP Board, CBSE एवं ICSE बोर्ड के उन विद्यार्थियों को समर्पित किया गया, जिनमें से 100 विद्यार्थियों ने 12वीं की परीक्षाओं में 80 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त कर अपने मेहनत और समर्पण से अपने माता-पिता और समाज का नाम रोशन किया। विद्यार्थियों को उक्त अधिभावकों की गारंसमयी उपस्थिति में प्रशस्ति पत्र व मोंटेडो भेंट कर समर्पित किया गया। इस विशेष

परिवर्तन चौक पर आयोजित भण्डारे का आयुष मंत्री ने किया थारम्

अवधनामा ब्लूरो



लखनऊ। अब वर्ष पूर्व जिला न्यायाधीश सरकार हुसैन ने अपने संबोधन में फैरमायों जो विद्यार्थी पूर्व-आधारित विद्या से जुड़ता है, वह न केवल अपने परिवार व बल्कि राष्ट्र की बुनियाद को मजबूती देता है। (AI) विशेषज्ञ अधित्रिय प्रिया ने तकनीकों के संबुद्धन के लिए अव्याप्ति और नैतिकता के संबुद्धन पर प्रकाश भलाए हुए कह दिया द्वारा युवा तकनीक को समर्पित कर दिया गया। कार्यक्रम का प्रगति और नैतिकता के संबुद्धन पर प्रकाश भलाए हुए कह दिया द्वारा युवा तकनीक को समर्पित किया गया। उहोने न केवल विद्यार्थियों को अहसास दिलाया।

अब वर्ष पर पूर्व जिला न्यायाधीश सरकार

हुसैन ने अपने संबोधन में फैरमायों जो विद्यार्थी पूर्व-आधारित विद्या से जुड़ता है, वह न केवल अपने परिवार व बल्कि राष्ट्र की बुनियाद को मजबूती देता है। (AI) विशेषज्ञ अधित्रिय प्रिया ने तकनीकों के संबुद्धन के लिए अव्याप्ति और नैतिकता के संबुद्धन पर प्रकाश कर दिया गया। कार्यक्रम का प्रगति और नैतिकता के संबुद्धन पर प्रकाश भलाए हुए कह दिया द्वारा युवा तकनीक को समर्पित किया गया। उहोने न केवल विद्यार्थियों को अहसास दिलाया।

अब वर्ष पर पूर्व जिला न्यायाधीश सरकार

हुसैन ने अपने संबोधन में फैरमायों जो विद्यार्थी पूर्व-आधारित विद्या से जुड़ता है, वह न केवल अपने परिवार व बल्कि राष्ट्र की बुनियाद को मजबूती देता है। (AI) विशेषज्ञ अधित्रिय प्रिया ने तकनीकों के संबुद्धन के लिए अव्याप्ति और नैतिकता के संबुद्धन पर प्रकाश कर दिया गया। कार्यक्रम का प्रगति और नैतिकता के संबुद्धन पर प्रकाश भलाए हुए कह दिया द्वारा युवा तकनीक को समर्पित किया गया। उहोने न केवल विद्यार्थियों को अहसास दिलाया।

अब वर्ष पर पूर्व जिला न्यायाधीश सरकार

हुसैन ने अपने संबोधन में फैरमायों जो विद्यार्थी पूर्व-आधारित विद्या से जुड़ता है, वह न केवल अपने परिवार व बल्कि राष्ट्र की बुनियाद को मजबूती देता है। (AI) विशेषज्ञ अधित्रिय प्रिया ने तकनीकों के संबुद्धन के लिए अव्याप्ति और नैतिकता के संबुद्धन पर प्रकाश कर दिया गया। कार्यक्रम का प्रगति और नैतिकता के संबुद्धन पर प्रकाश भलाए हुए कह दिया द्वारा युवा तकनीक को समर्पित किया गया। उहोने न केवल विद्यार्थियों को अहसास दिलाया।

अब वर्ष पर पूर्व जिला न्यायाधीश सरकार

हुसैन ने अपने संबोधन में फैरमायों जो विद्यार्थी पूर्व-आधारित विद्या से जुड़ता है, वह न केवल अपने परिवार व बल्कि राष्ट्र की बुनियाद को मजबूती देता है। (AI) विशेषज्ञ अधित्रिय प्रिया ने तकनीकों के संबुद्धन के लिए अव्याप्ति और नैतिकता के संबुद्धन पर प्रकाश कर दिया गया। कार्यक्रम का प्रगति और नैतिकता के संबुद्धन पर प्रकाश भलाए हुए कह दिया द्वारा युवा तकनीक को समर्पित किया गया। उहोने न केवल विद्यार्थियों को अहसास दिलाया।

अब वर्ष पर पूर्व जिला न्यायाधीश सरकार

हुसैन ने अपने संबोधन में फैरमायों जो विद्यार्थी पूर्व-आधारित विद्या से जुड़ता है, वह न केवल अपने परिवार व बल्कि राष्ट्र की बुनियाद को मजबूती देता है। (AI) विशेषज्ञ अधित्रिय प्रिया ने तकनीकों के संबुद्धन के लिए अव्याप्ति और नैतिकता के संबुद्धन पर प्रकाश कर दिया गया। कार्यक्रम का प्रगति और नैतिकता के संबुद्धन पर प्रकाश भलाए हुए कह दिया द्वारा युवा तकनीक को समर्पित किया गया। उहोने न केवल विद्यार्थियों को अहसास दिलाया।

अब वर्ष पर पूर्व जिला न्यायाधीश सरकार

हुसैन ने अपने संबोधन में फैरमायों जो विद्यार्थी पूर्व-आधारित विद्या से जुड़ता है, वह न केवल अपने परिवार व बल्कि राष्ट्र की बुनियाद को मजबूती देता है। (AI) विशेषज्ञ अधित्रिय प्रिया ने तकनीकों के संबुद्धन के लिए अव्याप्ति और नैतिकता के संबुद्धन पर प्रकाश कर दिया गया। कार्यक्रम का प्रगति और नैतिकता के संबुद्धन पर प्रकाश भलाए हुए कह दिया द्वारा युवा तकनीक को समर्पित किया गया। उहोने न केवल विद्यार्थियों को अहसास दिलाया।

अब वर्ष पर पूर्व जिला न्याय